कल्याण भारती

तू-मैं एक रक्त

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

कल्याण आश्रम के 70 वर्ष

वनवासी को दे दी गरिमा,
इस कल्याण आश्रम ने ।
सात दशक की उपलब्धि है,
भारत गौरव के सपने।।

कल्याण आश्रम स्थापना दिवस 2022 की झलकियाँ

गीत प्रस्तुत करती हुई
वनवासी युवतियां

वनवासी बहनों के साथ
महानगर के कार्यकर्ता

कार्यक्रम में उपस्थित
सुधी कार्यकर्ता

वनवासी नृत्य प्रस्तुत
करती हुई बहनें

कल्याण आश्रम की स्थापना का यह मंगल दिन ऊर्जित करता।
कार्यकर्ताओं का यह समूह इक-दूजे को है प्रेरित करता।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 33, अंक 4
अक्टूबर-दिसम्बर 2022 (विक्रम संवत् 2079)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor: Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- स्थापना दिवस संकल्प दिवस बने 2
- जनजाति समाज का स्वतंत्रता... 3
- देवघर की पावन भूमि पर... 5
- बधाई हो नीरज राम !! 7
- शिशु मेला में जाकर संगठन... 7
- कल्याण भवन मे वनवासी कल्याण... 8
- उत्तर हावड़ा में रानी सती दादी... 8
- रानी गाइदिन्ल्यू की आवक्ष प्रतिमा... 9
- पूर्वांचल कल्याण आश्रम की युवा... 10
- पूर्वांचल कल्याण आश्रम की युवा... 11
- नैपुण्य शिविर के मधुर संस्मरण 12
- अखिल भारतीय वनवासी कल्याण... 13
- अमृत वचन 13
- मकर संक्रांति : सूर्य के स्वागत... 14
- अपील !! 15
- अनुकरणीय 15
- बोधकथा... श्रीकृष्ण का आदेश 16
- कविता .... अब रुकना हमें नहीं ह 16

स्थापना दिवस संकल्प दिवस बने

26 दिसंबर 2022 को अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने अपने ध्येयनिष्ठ किंतु संघर्षरत जीवन के 70 वर्ष संपन्न कर 71 वर्ष में प्रवेश किया है। अत: स्वाभाविक है यह अवसर सिंहावलोकन, आत्म निरीक्षण तथा भविष्य दर्शन का है। सन 1952 में मात्र 13 वनवासी छात्रों को लेकर जिस कार्य का शुभारंभ हुआ वह कार्य वटवृक्ष की तरह फैल गया है।

जब कार्य प्रारंभ हुआ तब परिस्थितियां अत्यंत विषम थी। धर्मांतरण के कारण राष्ट्र विरोधी गतिविधियां अपने चरम पर थीं। हमारे पास न साधन थे, न कार्यकर्ता और न ही हमारे छात्रावास में अपने बच्चे भेजने के लिए लोग तैयार थे। वनवासी समाज के साथ संपर्क और संवाद भी चुनौतीपूर्ण कार्य था। किंतु हमारे संस्थापक अध्यक्ष बाला साहब ने अखंड प्रचंड पुरुषार्थ किया। उनकी तपस्या की खाद ने संगठन की धरती उर्वर बनाई और पुरुषार्थ ने इतना पानी सींचा कि फसल लहलहा उठी। शिक्षा, आरोग्य एवं श्रद्धा जागरण जैसे प्रकल्पों के माध्यम से प्रारंभ में उड़ीसा, मध्य प्रदेश और बिहार के जनजाति क्षेत्र में कार्य बढ़ा। 1978 में कार्य को अखिल भारतीय स्वरूप मिला। विभिन्न प्रांतों में प्रांत स्तर की इकाईयों का गठन हुआ और देखते ही देखते वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य देश के कोने-कोने तक फैल गया। उत्तर पूर्वांचल के राज्यों की भौगोलिक सामाजिक स्थिति कठिनतम होते हुए भी वहाँ कार्य प्रारम्भ हुआ और बढ़ता गया। आज वनवासी कल्याण आश्रम के विभिन्न प्रकल्पों, और कार्य योजनाओं से वनबंधुओं में उत्साह की सृष्टि हुई है। हमारे कार्यों के फलस्वरूप वनवासी समाज का आत्मविश्वास बढ़ा है। वनबंधुओं के विकास के लिए हमें भी कुछ करना चाहिए इस संकल्प के साथ बड़े-बड़े नगरों महानगरों में भी समितियाँ कार्यरत है। नगरों से प्रतिष्ठित चिकित्सक वनों में जाकर शिविर लगाते हैं जिनके माध्यम से मानो समाज रूपी नारायण की सेवा चल रही है। स्वास्थ्य परीक्षण एवं दवाओं से लाखों वनवासी लाभान्वित हो रहे हैं। कहीं कृषि आधारित ग्राम विकास तो कहीं गाय आधारित ग्राम विकास के प्रयास चल रहे हैं। सरकार की ओर से मिलने वाली सुविधाओं के संदर्भ में भी वनवासी समाज को अवगत कराने में हम काफी सफल हुए हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वनवासियों में यह विश्वास जागृत हो गया है कि उन्हें किसी भी कीमत पर अपना धर्म नहीं छोड़ना है। हमने न सिर्फ चर्च के प्रभुत्व को ध्वस्त किया है अपितु वनवासियों को अधिकार के साथ जीने का ठोस मकसद भी दे दिया। इन उपलब्धियों के बावजूद विपरीत आँधियों का वेग थमा नहीं है। स्वतंत्रता का अमृत काल प्रारंभ हो चुका है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने आगामी 25 वर्ष में भारत को वैभव के शिखर पर पहुँचाने का संकल्प लिया है। हम सभी इस संकल्प की सिद्धि के लिए कृतसंकल्पित एवं दृढ़ निश्चयी बनें। 70 वें स्थापना दिवस पर हमें जीवन को सार्थकता देने के लिए संकल्प करने पड़ेंगे, लक्ष्य बनाने पड़ेंगे तभी समाज में कल्याण आश्रम अध्यात्म, सेवा, संगठन और राष्ट्रभक्ति की आधार भूमि बनेगा। इस पवित्र कार्य से जुड़ कर हर व्यक्ति के मानस में आनंद की अनुभूति हो। उम्मीद है राष्ट्रीय शक्तियाँ जगेगी, एक नया सिलसिला शुरू होगा। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

जनजाति समाज का
स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

- जगदम्बा मल्ल, समाजसेवी व पूर्वोत्तर विशेषज्ञ

देश की आजादी में जितना योगदान बाकी समाज के लोगों का है उतना ही योगदान जनजाति समाज का भी है। जनजाति समाज के कई ऐसे योद्धा हुए जिन्होंने अंग्रेजी सरकार को संघर्षों में नाकों चने चबवा दिए, अंग्रेजों के शीर्ष कमांडरों के सहित सैकड़ों सैनिकों को गोरिल्ला युद्ध में मौत के घाट उतार दिये। जनजाति वीरों के स्वतंत्रता संग्राम की कहानी और इसाई मिशनरियों के धर्मान्तरण के विरुद्ध जनजातियों के महासंग्राम को अंग्रेजों द्वारा प्रायोजित वेतनभोगी राष्ट्रद्रोही लेखकों, साहित्यकारों, मानव विज्ञानशास्त्रियों, कवियों और इतिहासकारों ने या तो जानबूझ कर लिखा ही नहीं या लिखा भी तो उनका गलत इतिहास लिखा, उनकी वीरता की गाथा न लिख कर उनके पराजय और पिछड़ापन को कई गुना विकृत कर और बढ़ा-चढ़ा कर लिखा। इससे अंग्रेजों को बल मिलता था और जनजाति वीरों और जनजाति समाज के मनोबल पर विपरीत प्रभाव पड़ता था। इस राष्ट्रद्रोह के पुरस्कार के रूप में अंग्रेज इनको 'रायबहादुर', 'केशरी' और पीएचडी की उपाधियों से अलंकृत करते थे। अन्य उपाधियों के साथ अलग-अलग अवसरों पर अकूत धन देते थे। विदेश यात्रा पर भेजते थे जहाँ इनके भौतिक एवं शारीरिक आनंद की सारी सुविधा दी जाती थीं और इनके ही द्वारा हिन्दुओं के खिलाफ विश्वासघात करवाया जाता था।

आत्म-स्फूर्ति और आत्म-प्रेरणा

मैदानी इलाकों के रणबाकुरों को प्रेरित करने के लिए वेद-पुराण है, रामायण–महाभारत महाकाव्य है, गीता जैसा अनमोल दर्शन शास्त्र है, महापुरुषों की लम्बी श्रृंखला है, क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों की लम्बी कड़ी है; राम, कृष्ण, शिवाजी और राणाप्रताप जैसे योद्धा हैं जिनसे प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलता है। ये बातें जनजाति समाज पर समान रूप से लागू होती हैं। किन्तु ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से जनजाति और गैर-जनजाति समाजों के सामाजिक और सांस्कृतिक मेल-जोल में बाधा आ गई। शिक्षा की कमी, घोर गरीबी, महामारी, यातायात और संचार-सुविधा का अभाव, ऊपर से मुसलमानों, इसाइयों और साम्यवादियों का अत्याचार, जमींदारों की लूट – इन कारणों से जनजाति-गैरजनजाति के बीच की खाई बढ़ती गई। फिर भी राष्ट्रीय एकात्मता का भाव उनके खून में था, उनके जेहन में था, उनके डी एन ए में था, देश और धर्म में अटूट भक्ति जन्मजात थी क्योंकि पूर्वज तो एक ही थे। इसीलिए जहाँ कहीं मुसलमानों ने अथवा अंग्रेजों ने उनके धर्म और देश पर आघात करने का दुस्साहस किया वहाँ का जनजाति समाज अकेले ही अथवा जहाँ संभव था वहाँ गैर-जनजाति समाज के साथ अथवा वहाँ के राजा के साथ मिलकर सशस्त्र क्रांति अथवा युद्ध में भाग लिया और मुसलमानों अथवा अंग्रेजों को मार भगाने में निर्णायक भूमिका अदा की। भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष की कहानी यही बयान करती है।

खोनोमा के अंगामी हिन्दू नागाओं का खूनी संघर्ष सुदूर पूर्वोत्तर में 1845 से 1879 तक अंग्रेजों और ईसाई मिशनरियों के खिलाफ़ नागालैंड के खोनोमा गाँव और खोनोमा के नेतृत्व में पश्चिमी और उत्तरी अंगामी क्षेत्र के तेरह गाँवों का अंगामी नागा गठबंधन अंग्रेजों को अपने इलाकों में घुसने भी नहीं दिया। 1845 में अंग्रेजी

शासन का भारतीय मूल का पुलिस दरोगा भोगचंद अंग्रेजों के शासन-विस्तार का जायजा लेने जब अपने सिपाहियों के साथ खोनोमा पहुंचा और शेखी बघारने लगा तो खोनोमा के हिन्दू अंगामी नागा वीरों ने अपना धारदार दाव (भुजाली) निकाला और उसके शरीर के दो टुकड़े कर अपने वन-देवता को भेंट चढ़ा दी। इसका बदला लेने के लिए कैप्टेन विन्सेंट सेना लेकर खोनोमा में छः मास तक बैठा रहा और खोनोमा गाँव को जला दिया, उनके धान के कुठलों में आग लगा दी और गाँव वालों को अपने घर बनाने नहीं दिया, खेती करने नहीं दिया और जंगलों में छिपे अंगामी वीरों को तड़पा-तड़पा कर मार डालने की योजना बनाई। इस प्रकार 1845 से 1879 तक अंगामी नागा हिन्दुओं ने अंग्रेजी सेना का प्रतिकार किया और 1879 में कोहिमा के जिलाधिकारी (डिप्टी कमिश्नर) गुइबन हेनरी दामंत (जी एच दामंत) अपने सैनिकों के साथ खोनोमा पर कब्ज़ा करने पहुँचा तो अंगामी वीरों ने क्रूर दामंत सहित इसके पचासों सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। क्रुद्ध अंग्रेज ईसाई शत्रुओं ने खोनोमा के एक सौ से अधिक लोगों को मार दिया और पूरे गाँव को समय-समय पर जला दिया। इनके आतंक के कारण खोनोमा के वीरों ने परिवार सहित कई अवसरों पर पर्वत शिखरों के घने जंगलों में साल-साल भर तक जीवन बिताया किन्तु अंग्रेजों के समक्ष हार नहीं मानी, न ही ईसाई मिशनरियों को अपने गाँव में घुसने दिया। इनके सहयोगी सभी तेरह गाँवों के अंगामी नागा हिंदू वीरों को भी अंग्रेजों ने प्रताड़ना दिया। इनके धान के कुठलों में आग लगा दिया, खेत में खड़ी फसल में आग लगा कर पूर्णरूपेण जला दिया ताकि अंगामी नागा वीर भूख-प्यास से तड़प कर मर जांय। इस संघर्ष में कोहिमा बड़ा बस्ती भी शामिल था। किन्तु नागा वीरों ने हार नहीं मानी।

नागाओं द्वारा ईसाई मिशन का बहिष्कार

1872 में अमरीकी बैपटिस्ट मिशनरी रेव. ई डब्ल्यू क्लार्क असम के डिब्रूग़ढ से आओ नागा हिन्दुओं के गाँव डेका हाईमांग (मोलंकीमांग) में 1872 में धर्मान्तरण करने हेतु पहुँचा। गाँव के हिन्दू प्रमुख इसकी चाल को जब तक समझ पाते तब तक इस गोरी चमड़ी वाले किन्तु मन के काले मिशनरी ने धन का लालच देकर कुछ गाँव वालों को ईसाई बना लिया और पैतृक हिन्दू धर्म की निंदा करने लगा। गाँव वालों ने धर्मान्तरित लोगों की खूब पिटाई की और गाँव से भगा दिया। क्लार्क ने डिब्रूग़ढ मिशन केंद्र की मदद से मोलंगइम्सेन (Molungyimsen) ईसाई गाँव बसाया और धर्मान्तरित लोगों को लेकर इस गाँव में आ गया।

इसी प्रकार जहाँ-जहाँ अंग्रेज और ईसाई मिशनरी गए उन सब जगहों पर नागा हिन्दुओं ने इनका सशस्त्र विरोध किया। इस क्षेत्र के कुकी, कछारी, गारो और मीजो सहित सभी जनजातियों ने भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और भारतमाता की बलिवेदी पर अपनी शहादत दी। महान क्रन्तिकारी वीर शम्भूधन फुंगलोसा, हेपाउ जादोनांग, पद्मभूषण रानी गाइदिन्ल्यू सहित सैकड़ों क्रांतिकारियों ने अपनी शहादत दी है। किन्तु कलमगीर नक्सलियों ने उनका इतिहास लिखा ही नहीं। यदि लिखा भी तो अंग्रेजों के क्रूरता को शौर्य और जनजाति वीरों के स्वतंत्रता की लड़ाई में शूरवीरता को बर्बरता के रूप में वर्णन किया। हिन्दू हृदय सम्राट जीवनव्रती प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर इतिहास की गलतियों का प्रक्षालन करते हुए इन जनजाति स्वतंत्रता सेनानियों की वीरगाथा लिखने हेतु संगठित और सुनियोजित प्रयास करने की महती आवश्यकता है। ■

देवघर की पावन भूमि पर बाबाधाम के सान्निध्य में लक्ष्य को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाला

28वाँ नैपुण्य शिविर और उसके अविस्मरणीय पल

- डॉ रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

शिविर शब्द स्वयं में बहुत ही गंभीर अर्थ लिए हुए है। हमारे मनीषियों ने विभिन्न प्रकार से शिविर को पारिभाषित किया है। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं को मनसा-वाचा-कर्मणा परस्पर बाँधे और बँधे रहने की प्रयोगशाला है - नैपुण्य शिविर। भक्ति, ज्ञान और योग का समागम है प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला यह नैपुण्य शिविर।

जब से यह सूचना मिली कि इस बार का नैपुण्य शिविर बाबाधाम देवघर में आयोजित होगा, तब से ही कल्पना उड़ान भरने लगी। अधिकारीवृन्द ने कार्यकर्ताओं संग शिविर को सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु समितियों का गठन किया। शिविर की तिथि तय की गई 12 नवंबर सायं से 13 नवंबर सायं 2022।

शिविरस्थल था देवघर का सतनालीवाला भवन। 11 नवंबर से ही प्रबंध - समिति के कार्यकर्तावृन्द पहुँचने लगे। 12 नवंबर प्रात: तक 165 कार्यकर्ता शिविरस्थल पहुँच गए। यह शिविर सात सत्रों में आयोजित हुआ।

12 नवंबर प्रात: बाबा बैद्यनाथ धाम का दर्शन और वासुकिनाथ दर्शन। अपराह्न साढ़े चार बजे से श्री राजेंद्र शर्मा के शिविर गीत से प्रथम सत्र का प्रारंभ हुआ। पूर्वांचल कल्याण आश्रम की संगठन मंत्री श्रीमती शशी अग्रवाल जी ने संचालन करते हुए शिविर के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और उपस्थित अधिकारियों को मंच पर आसन ग्रहण करने हेतु निवेदन किया। आमंत्रित अधिकारियों एवं अतिथियों का परिचय व स्वागत हुआ। प्रथम सत्र में मार्गदर्शन हेतु श्री भगवान सहाय जी को आमंत्रित किया गया। अपनी तमाम व्यस्ताओं के बीच भगवान सहाय जी ने समय निकालकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। शिविर के प्रथम सत्र के अपने संबोधन में आपने बाबा बैजनाथ धाम और बासुकिनाथ जी से जुड़ी हुई कथाओं का स्मरण कराया। कल्याण आश्रम की प्रेरणा और विचार पर बोलते हुए आपने कहा कि एक समय ऐसा था जब वनवासी भाई-बहनों की सेवा के लिए सिर्फ ईसाई मिशनरियों का ही नाम आता था। लेकिन इनका कार्य सेवा नहीं बल्कि सेवा के बदले हमारी सनातन परंपराओं को नष्ट करना था। हमने उनके सामने सेवा भावना की एक बड़ी रेखा खींची। संगठनात्मक ढाँचा का विस्तार से वर्णन किया। आपने बताया कि स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनजाति समाज में ऐसे बलिदानी हुए हैं जिन्होंने मंगल पांडे और तात्या टोपे से पहले स्वाधीनता आंदोलन का बिगुल बजा दिया था, जनजाति समाज का बलिदान भारत की भावी पीढ़ी को सदा प्रेरित करता रहेगा। आपने जनजाति

समाज से जुड़े कल्याण आश्रम के अनेक आयामों की भी चर्चा की।

शिविर के द्वितीय सत्र को दक्षिण बंग के संगठन मंत्री श्री उत्तम महतो जी ने संबोधित किया, आपने कल्याण आश्रम के आयाम और प्रकल्पों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इस सत्र के द्वितीय भाग को कोलकाता महानगर महिला सहमंत्री श्रीमती सीमा रस्तोगी जी ने संबोधित किया। अपने संबोधन में आपने कहा कि जनजाति समाज के उत्थान के लिए कार्यकर्ताओं को अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर वनवासी क्षेत्रों तक जाना होगा। तत्पश्चात 8.15 से 9.15 तक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। तदुपरांत स्वादिष्ट भोजन और बाबा के प्रांगण से सटे भवन में निद्रा।

दिनांक 13 नवंबर शिविर का दूसरा दिन प्रात: जागरण, योगाभ्यास और शाखा के कार्यक्रमों से संपन्न हुआ। जलपान के पश्चात् शिविर के चतुर्थ सत्र का प्रारंभ हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय वीरों का योगदान विषय पर श्रीमती शशी मोदी, श्रीमती उमा गोयल और पीयूष अग्रवाल जी ने आज़ादी के लिए बलिदान होने वाले जनजाति भगिनी-बंधुओं का परिचय पावर प्वाइंट के माध्यम से शिविरार्थियों को दिया। बीच-बीच में सभी समितियों के कार्यकर्ताओं का परिचय सत्र भी हुआ। अगले पंचम सत्र को आगे बढ़ाते हुए पूर्व क्षेत्र के नगरीय कार्य-प्रमुख महेश जी मोदी ने कार्यकर्ताओं को संगठन, कार्यकर्ता और समय प्रबंधन पर अपने विचार प्रस्तुत किए। षष्ठम सत्र में मनोज जी अग्रवाल और इंदु जी नाथानी ने शिविर प्रतिभागियों से परस्पर बातचीत के माध्यम से यह बताया कि पहली बार नैपुण्य शिविर में 35-40 कार्यकर्ता अपने जीवन सहचर / सहचरी के साथ सम्मिलित हुए हैं। इस तरह शिविर ने कल्याण आश्रम के कार्य से कार्यकर्ता के परिवार को जोड़ने का भी कार्य किया है। आप दोनों का यह सत्र चर्चात्मक था। वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभव सुनाए। मनोज जी अग्रवाल और इंदु जी नाथानी के परस्पर विचार-विनिमय वाले इस सत्र में धनसंग्रह के लिए जाने वाली भगिनी कार्यकर्ताओं ने बताया कि उन्हें समाज के व्यंग्य झेलने के साथ परिवार के भी तीखे सवालों का सामना करना पड़ता था। लेकिन समय के साथ परिवार और समाज की भावनाएँ बदली। समाज ने कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के कार्य को सराहा। कार्यकर्ताओं के बच्चों के संबंध भी अच्छे परिवारों में हुए। आप दोनों ने आगे यह भी चर्चा की कि परिवार के सदस्यों को कल्याण आश्रम के भाव से जोड़ने का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण आयाम है सेवा-पात्र योजना तथा दीपक योजना। आप दोनों के इस पारस्परिक विचार-विनिमय सत्र में शिविर के प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। सभी ने खुले मन से स्वीकार किया कि कार्यकर्ता के कार्य से उनके परिवार के सदस्यों का जुड़े रहना अत्यंत आवश्यक है, तभी यह कार्य सतत्, अनवरत और निरंतर अबाध गति से आगे बढ़ता रहेगा।

शिविर के सातवें एवं समापन सत्र में उत्तर-मध्य क्षेत्र के क्षेत्रीय नगरीय कार्य प्रमुख श्री हिरेन्द्र सिन्हा जी ने **कल्याण आश्रम के सामने चुनौतियाँ** विषय पर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। पूर्व क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री विजय मोहंती जी, सह-संगठन मंत्री श्री विश्वामित्र महंत जी का मार्गदर्शन भी हम सभी को प्राप्त हुआ। भोजनोपरांत श्रीमती शशी जी मोदी ने एकल गीत लिया जो बहुत ही प्रेरणास्पद और मधुर था। पश्चिम क्षेत्र के सह नगरीय कार्य प्रमुख श्रीमान जयंत जी अभ्यंकर

को शिविर में मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया। श्री जयंत जी अभ्यंकर ने **कल्याण आश्रम के कार्य का प्रभाव** विषय पर अपना वक्तव्य रखा। आपने चार बिंदुओं को पारिभाषित किया। वे बिंदु इस प्रकार हैं। लंबे समय तक प्रभावशाली रहने वाला कार्य करना, लक्ष्य स्पष्ट और निश्चित हो, निरंतर कार्य करते रहना, संगठित होकर कार्य करना। श्री जयंत जी अभ्यंकर जी की सहधर्मिणी श्रीमती मेधा जी ने जनजातीय महिलाओं की चिंतनधारा को हम सभी के समक्ष रखा। 13 नवंबर के एक-एक सत्र का कुशल संचालन श्री राजेश पोद्दार, संजय जी गोयलऔर श्रीमती निर्मला जी ने किया। शिविर की व्यवस्था में अनवरत लगे रहे कोलकाता महानगर मंत्री श्री पवन जी केजरीवाल तथा कोलकाता महानगर संगठन मंत्री श्री विमल मल्लावत जी। शिविर अधिकारी के रूप में दक्षिण बंग प्रांत मंत्री श्री संजय जी रस्तोगी उपस्थित थे।

शिविर की सफलता के लिए कोलकाता हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख श्री संदीप जी चौधरी ने आवास व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, सतनाली भवन के संरक्षकों का और देवघर समिति के सभी सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त किया। अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष श्री शंकर जी अग्रवाल के निर्देशन में शिविर की रूपरेखा खींची गई थी, एतदर्थ संदीप जी ने सभी कार्यकर्ताओं की ओर से आपको याद किया। पूर्व क्षेत्र के नगरीय कार्य-प्रमुख महेश जी मोदी ने महाभारत की एक घटना का स्मरण कराते हुए संदीप जी को सुदर्शनचक्र (केंद्रबिंदु) की उपाधि देते हुए शिविर की सफलता का श्रेय संदीप जी को दिया। इस प्रकार नैपुण्य शिविर अपनी पूर्णता को प्राप्त करते हुए संपन्न हुआ। ■

बधाई हो नीरज राम !!

यह सूचित करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि छोटानागपुर हिंदू रांची समुदाय के मास्टर नीरज राम, पुत्र श्री मनोज राम, निवासी बकुलतला, मध्य अंडमान ने नीट 2022 में 82% अंक हासिल किये है और अपने प्रयासों से एएनआईआईएमएस, पोर्ट ब्लेयर में एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश लिया है। ■

शिशु मेला में जाकर संगठन का उत्कृष्ट रूप दिखा

- आभा कसेरा

गत 4 दिसंबर को चिनसुरा में हुए शिशु मेला का अनुभव अत्यंत सुखद रहा। जिस निपुणता और सरलता से सारी गतिविधियाँ हुई उसे देखकर पता चलता है कि कल्याण आश्रम ताकतवर और सुघड़ हो गया है। कार्यकर्ता इस तरह काम कर रहे थे जैसे उनका व्यक्तिगत कार्य हो। सारी तैयारी भी बहुत अच्छी तरह कर के लाई गई थी। चाहे वो खाना हो या खेल; हर चीज सराहनीय थी। यह किसी के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है कि बिना व्यक्तिगत स्वार्थ के भी हम दूसरों को अपार खुशी और सम्मान दे सकते हैं। बस मन में सही भावना चाहिए। ■

कल्याण भवन मे वनवासी कल्याण आश्रम का 70 वाँ स्थापना दिवस समारोह

- संजय गोयल, प्रांत नगर प्रमुख

वनवासी कल्याण आश्रम का 70 वाँ स्थापना दिवस समारोह दिनांक 26 दिसम्बर को वनयोगी बालासाहब देशपांडे की पवित्र स्मृति के साथ कल्याण-भवन में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंच पर उपस्थित अतिथियों ने भारत माता, भगवान बिरसा मुंडा, प्रभु राम, वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्व अध्यक्ष दिवंगत बालासाहब देशपांडें, पूर्व अध्यक्ष जगदेव राम उराँव जी के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। प्रारम्भ में वनवासी बहनों ने समूह गान प्रस्तुत किया, जो स्वावलंबन प्रकल्प के अन्तर्गत सिलाई प्रशिक्षण हेतु आई हुई थी। समूह गान के पश्चात वनवासी बहनों ने संथाली लोकनृत्य प्रस्तुत किया। वनवासी लोकनृत्य सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं है, अपितु ये जनजातियों की परम्परा, सामाजिक और धार्मिक मान्यता, संस्कृति और लोकाचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। कल्याण भवन में सिलाई प्रशिक्षण हेतु आई हुई बहनों ने कल्याण आश्रम से जुड़े अपने अनुभव सुनाए। अनुभव सुनाते हुए भावविह्वल बहनों की आँखें भर आईं।

जशपुर, जिसे हम वनवासी कल्याण आश्रम का तीर्थस्थल भी कह सकते हैं, से जुड़े प्रसंगों को वीडियो क्लिप के माध्यम से युवा समिति के प्रमुख पीयूष जी अग्रवाल ने प्रस्तुत किया। लोमहर्षक इस वीडियो क्लिप के माध्यम से सभा में उपस्थित हम सभी कार्यकर्तावृन्द कुछ क्षणों के लिए जशपुर ही चले गए थे।

कल्याण-भारती की संपादक श्रीमती स्नेहलता बैद ने कल्याण आश्रम के उद्देश्य एवं 7 दशक की यात्रा एवं कल्याण आश्रम के संस्थापक अध्यक्ष वनयोगी बालासाहब देशपांडे के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला। बालासाहब जी से जुड़े एक संस्मरण को सुनाते हुए आपने कहा कि एकबार किसी ने बालासाहब जी से पूछा था कि मनुष्यों की इतनी बड़ी भीड़ में सही व्यक्ति (कार्यकर्ता) की पहचान कैसे की जाए? इस पर बालासाहब जी द्वारा मन को छू लेने वाला उत्तर स्नेह जी ने बताया, उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में बालासाहब जी ने कहा था कि जैसे वन के भीतर असंख्य वृक्षों के मध्य चंदन के वृक्ष की लकड़ी को घिसकर ही पहचाना जा सकता है, ऐसे ही जीवन यात्रा में संघर्ष में तपे हुए और कार्य के पत्थर पर घिसे हुए लोग ही सही कार्यकर्ता होते हैं। तत्पश्चात् शशी जी मोदी ने बहुत ही मधुर, कर्णप्रिय तथा मन की गहराइयों तक छुनेवाला एकल गीत प्रस्तुत किया...मनुष्य तू महान है। एकल गीत के उपरांत कल्याण आश्रम के छात्रावास से निकले दो विद्यार्थी विभीषण मुंडा और प्रकाश कंजुर ने कल्याण आश्रम से जुड़े अनुभव सुनाए।

स्थापना दिवस समारोह के मंच पर महानगर महिला संरक्षिका श्रीमती उमा सुराना, अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख डॉ विश्वामित्र, अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष श्री शंकरलाल अग्रवाल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यवाह माननीय विभास मजूमदार उपस्थित थे। ■

उत्तर हावड़ा में रानी सती दादी का भव्य मंगल पाठ

- शर्मिला अग्रवाल, अध्यक्षा उत्तर हावड़ा महिला समिति

उत्तर हावड़ा की महिला समितियों ने विगत 29 दिसम्बर को रानी सती दादी का मंगल पाठ बड़े ही धूम-धाम से सम्पन्न किया। कार्यक्रम में 350 से अधिक महिला-पुरुषों ने शिरकत की। उल्लेखनीय है कि इस मंगल पाठ का उद्देश्य हमारे संगठन को मजबूत करना है। ■

रानी गाइदिन्ल्यू की आवक्ष प्रतिमा स्थापित

अपनी प्रचलित छवि के अनुरूप उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने गत 6 दिसम्बर 2022 को अपने गृह नगर गोरखपुर के रेल विहार कालोनी के एक सार्वजानिक पार्क में नागालैंड प्रदेश की निवासिनी (जन्म स्थान मणिपुर) स्वतंत्रता सेनानी पद्मभूषण रानी गाइदिन्ल्यू को सम्मानित कर अपने अनुपम कार्यों की सूची में एक और नाम जोड़ दिया। मुख्यमंत्री पूज्य योगी जी की प्रेरणा से इस पार्क में रानी माँ की 3.5 फुट की आवक्ष प्रतिमा लगाकर गोरखपुर नगर निगम के महापौर सीताराम जायसवाल ने एक ऐतिहासिक कार्य किया है। इस प्रतिमा का वैदिक मन्त्रों से पुरोहित के निर्देशानुसार यजमान श्री सीताराम जायसवाल, महापौर नगर निगम गोरखपुर ने पूजा अर्चना की और माल्यार्पण किया। सभा को संबोधित करते हुए महापौर सीताराम जायसवाल ने कहा, "मणिपुर के तमेंग्लांग जिला के एक दूरस्थ गाँव – लंग्काओ की रहने वाली गाइदिन्ल्यू 10 वर्ष की अल्पायु में अपने गुरु हेपाउ जादोनांग की सेना में महिला वाहिनी का नेतृत्व किया और अग्रेजों की सेना पर सिंहनी की भांति आक्रमण करते हुए गोरों की हत्यारी सरकार को ललकारा, अंग्रेजी सरकार का पूर्ण वहिष्कार किया, विदेशी सामानों की होली जलाई। साथ ही ईसाई मिशनरियों के धर्मांतरण कुचक्र से नागा हिन्दुओं को बचाया। इस कारण अंग्रेजों ने इन पर देशद्रोह और हत्या का मिथ्या आरोप लगा कर आजीवान कारावास दे दिया और आजादी मिलने पर 15 वर्षों की जेल यात्रा के बाद इन्हें जेल से छोड़ा गया। किन्तु आजादी के बाद में भी इन्हें अपने गाँव से 500 किमी दूर नेफा के यिमरूप नामक चांग गाँव में गृह कैद रखा गया और 1952 में अपने गाँव जाने की अनुमति मिली। किन्तु वहाँ भी चर्च प्रायोजित नागा आतंकवादियों ने इन्हें चैन से रहने नहीं दिया इस कारण 1960-66 में दुबारा भूमिगत होकर नागा आतंकवादियों और ईसाई मिशनरियों से सशस्त्र संग्राम किया। इसके बाद कोहिमा में रहते हुए हिन्दू और हिन्दुस्थान के लिए आजीवन कार्य किया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के समान ही इनका जीवन प्रेरणादायी है और इनके स्वतंत्रता संग्राम की गाथा भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेगी। इस अवसर पर बोलते हुए गोरक्ष प्रान्त के संघचालक प्रो. पृथ्वीराज सिंह जी ने कहा, "अज्ञानता के कारण देश के विभिन्न भागों में आम धारणा है कि सभी नागा नागरिक इसाई हो गए हैं और सभी इसाई नागा देशद्रोही हैं। किन्तु यह सही नहीं है। न तो सभी नागा ईसाई हैं न ही सभी इसाई नागा देशद्रोही हैं, कुछ मुठ्ठी भर ईसाई नागा चर्च के बहकावे में आकर आतंकवाद और अलगाववाद का हौवा खड़ा किये हुए हैं वरना रानी गाइदिन्ल्यू भी तो नागा ही हैं न। इन्होंने तो कोहिमा में ही रहते हुए नागा आतंकवादियों और चर्च के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। हमारे गोरखपुर छात्रावास में पढ़ने वाले इन बच्चों के माँ-बाप अलगाववादी हैं क्या ? इनमें से कुछ ईसाई भी हैं किन्तु वे सभी भारत-भक्त हैं।" इसके पूर्व रानी गाइदिन्ल्यू पुस्तक के लेखक जगदम्बा मल्ल ने रानी माँ के स्वतन्त्रता संग्राम और उनके हरक्का नामक हिन्दू धार्मिक आन्दोलन पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

इस अवसर पर गोरखपुर श्रीराम वनवासी छात्रावास के नागा छात्रों ने प्रतिमा-पूजन के समय हरक्का भजन गाये, हरक्का नृत्य प्रस्तुत किये और वन्देमातरम् राष्ट्रगीत प्रस्तुत किया। ■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की युवा समिति द्वारा आयोजित कार्यशाला

बचत कैसे करें

- शशी मोदी, महानगर महिला सह-संगठन मंत्री

अपनी आय विचार के, खर्च करो श्रीमान,
रहो सुखी परिवार संग, रहे बचत का ध्यान।।
बूँद-बूँद से घट भरे, अक्षर- अक्षर ज्ञान,
थोड़ा-थोड़ा बचत कर, तुम भी बनो महान।।

सामान्य अर्थों में बचत का अर्थ धन को संचित करने से है किन्तु अर्थशास्त्र में बचत का अर्थ मुद्रा को बैंक में रखने, पेंशन फंड में निवेश करने इत्यादि से लगाया जाता है। 'बचत' किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास का आधार है ।

आजकल युवा वर्ग में बचत की प्रवृत्ति देखने को कम मिल रही है। युवावर्ग कभी दिखावे के चक्कर में अनावश्यक व्यय को अपना रहा है। इस व्यय की कोई उपयोगिता भी दिखाई नहीं पड़ती। हमें सबसे खराब स्थिति के लिए तैयार रहने के लिए पैसे बचाने के तरीके सीखने की जरूरत है। हम भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर सकते और इसलिए जीवन जीना हमेशा अनिश्चितताओं से भरा लगता है। हम जो सबसे अच्छा कर सकते हैं वह है वित्तीय सहायता के साथ तैयार रहने का प्रयास करना। जीवन में बदलाव पैसे बचाने के सबसे आसान तरीकों में से एक है। आय और बचत जैसे विषय पर अपनी युवा पीढ़ी को जागरूक करने के लिए कल्याण भवन में दिनांक 22 सितम्बर 2022 को दो घंटे की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसके संयोजक थे क्षेत्रीय युवा प्रमुख पीयूष जी अग्रवाल ।

सुरभि जैन जो आय, बचत और निवेश सलाहकार हैं, वे इस कार्यशाला में प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित थीं। सुरभि जैन जी ने अपनी वक्तृता में बताया कि खर्च करना चाहिए, लेकिन साथ में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिन खर्चों के बिना भी अपना जीवन जी सकते हैं, उन खर्चों से दूर रहना चाहिए। आपने आगे कहा कि खर्चों से जो भी बचत होती है उसे निवेश करना चाहिए। निवेश के लिए आपने सरकारी प्रतिष्ठानों में निवेश की सलाह दी। शेयर खरीदने और पीपीएफ में निवेश करने के लाभ-हानि को भी समझाया। ऋण लेने की सही आयु की भी सलाह दी। खर्च करने के अनुशासित आयामों का वर्णन किया। बचत करने के विभिन्न तरीकों का वर्णन किया।

सुरभि जी के वक्तव्य के बाद प्रश्नोत्तर एवं अंत: संवाद सत्र भी था। श्रोताओं ने अनेक प्रश्नों के माध्यम से अपनी जिज्ञासा को शांत किया। श्रोताओं के बीच से एक बहुत ही अनुकरणीय सुझाव आया कि हमें अपने जीवन के विभिन्न खर्चों के लिए बचत करते समय धनराशि का कुछ अंश देश, समाज और वनवासी बन्धुओं के लिए भी रखना चाहिए। कार्यकर्ता का यह सुझाव सुरभि जी के मन को छू गया। उन्होंने स्वीकार किया कि बचत के अंतर्गत यह बिंदु अवश्य जोड़ा जाना चाहिए।

सुरभि जी ने यह भी तय किया कि अब से वे जहाँ भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत करेंगी, उसमें बचत के लिए यह हिस्सा भी अवश्य जोड़ेंगी।

पाठकों तो हुई न यह अनुकरणीय वार्ता।

पैसों की ही बचत से, तन-मन स्वस्थ प्रसन्न,
अपने संग ही देश का, रहे कोष सम्पन्न। ■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की युवा समिति द्वारा आयोजित
शिशु मेला 2022

- पीयूष आग्रवाल, प्रांत युवा प्रमुख

घर से मंदिर है बहुत दूर, चलो यूँ कर लें
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाये...

शिशु मनुष्य का पूर्वरूप है। मनुष्य की संपूर्ण शक्तियाँ और संभावनाएँ शिशु में सन्निहित रहती हैं। उसके समुचित पालन-पोषण एवं शिक्षा पर ही उसका भावी विकास निर्भर रहता है। अत: मनुष्य की शिक्षा को पूर्ण बनाने की नींव शैशवावस्था में ही पड़ जानी चाहिए। इसी से आज के युग में शिशु-शिक्षा और उसका विकास को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया जाता है। कल्याण आश्रम की विभिन्न योजनाओं में शिशु शिक्षा और उनका विकास भी एक महत्त्वपूर्ण प्रकल्प है। बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं। आगे बढ़ने का अवसर देकर बच्चों को हर क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों से निपटने के लिए तैयार किया जा सकता है जिससे देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे सकें। वनों में रहने वाले हमारे भारत के भविष्य या ऐसा कहें वे बच्चे यदि विकास की मुख्य धारा से नहीं जुड़े, तो मान लीजिए भारत का विकास भी अधूरा ही रहेगा।

राष्ट्र वंदना के इसी अध्याय में 3 वर्ष के अंतराल के पश्चात कल्याण आश्रम की युवासमिति द्वारा 4 दिसंबर को शिशु मेला का आयोजन हुगली जिले के चुंचुड़ा अंचल के कुटीर बागान के फुटबॉल मैदान में किया गया। कोलकाता से 39 लोगों के दल ने सुबह 7:30 बजे प्रस्थान किया। 9:30 पहुंचकर गंतव्य पर पहुँच कर पता चला कि बच्चों के आने में अभी काफी समय है। कोलकाता से गए युवाओं को संघ के खेल जैसे भस्मासुर, खो-खो इत्यादि खेल खिलाया गया। पहली बार इस तरह के खेल खेलकर सबको बड़ा आनंद आया। 11:30 से शिशु मेला के औपचारिक आयोजन का प्रारंभ हुआ। मानिकतला समिति से कल्पना दीदी अपने साथ सात आठ लोगों को लेकर आई थीं। उनका कल्याण आश्रम के कार्य से परिचय करवाया। भगवान बिरसा मुंडा, भारत माता और भगवान श्री राम के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। पुष्प अर्पित किया गया। कल्पना दीदी ने एक बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया। पीयूष अग्रवाल ने भगवान बिरसा मुंडा के जीवन का परिचय दिया। स्कूली छात्राओं ने नृत्य प्रस्तुत किया। संथाली महिलाओं ने अपने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किये। नृत्य की उमंग और तरंग को देखते देखते 50 और संथाल महिलाओं ने नृत्य को ज्वाइन कर लिया और सबने एक लय में संथाली नृत्य को प्रस्तुत किया। अद्भुत दृश्य था यह। शिशु शिक्षा केंद्र के पास लगभग 100 बच्चे एकत्रित हुए और उनके साथ तरह तरह के खेल खेले गए। रेसिंग में जीते प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। ग्राम के बच्चों में टॉफी, बिस्किट, ड्रॉइंग-बुक, कलर पेंसिल आदि भी वितरित किया गया। बहुत ही स्वादिष्ट भोजन करने और कराने के बाद हम सभी लोग कोलकाता वापस आ गए। युवा वर्ग ने कल्याण आश्रम से जुड़ने का संकल्प किया।

नहीं सोचा है तो सोचिये।
नहीं जाना है तो जानिए।
ये भी हैं भविष्य इस देश के,
इस बात को मानिये।
और मैं ये नहीं कहता....
अपना सर्वस्व इनको दीजिये।
लेकिन अगर जो बन पड़े,
इनके लिए कुछ कीजिए। ■

नैपुण्य शिविर के मधुर संस्मरण

- अरुणा शाह, संयोजिका उजास समिति

ववासी कल्याण आश्रम लगभग 60 हज़ार प्रकल्पों के माध्यम से वनवासी समाज में शिक्षा, चिकित्सा, संस्कार, स्वावालंबन, समरसता और स्वदेश प्रेम का अलख जगा रहा है। कल्याण आश्रम की सभी गतिविधियों को सुचारु एवं व्यवस्थित रूप से शनै: शनै: जो साकार करते हैं, वे हैं इस संगठन से जुड़े कार्यकर्ता। कर्यकर्ताओं की कार्यप्रणाली में उत्साह बना रहे उसमें कोई भी शिथिलता न आने पाए, इसके लिए प्रतिवर्ष नैपुण्य शिविर का आयोजन होता है । ईश्वर की असीम अनुकम्पा से इस बार अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर देवघर स्थित सतनाली भवन में आयोजित हुआ। बाबा बैजनाथ के पवित्र-पावन धाम में आयोजित नैपुण्य शिविर एक उच्चश्रेणी का बौद्धिक संगठनात्मक कार्यक्रम था। सभी ने बहुत ही अच्छी संख्या में इसमें भाग लिया था। हमारे आयोजक बंधुओं ने इसे स्मरणीय और उपयोगी बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया था। कहाँ से शुरुआत करूँ.... कोलकाता से देवघर की ट्रेन-यात्रा.. स्टेशन से धर्मशाला तक सुनियोजित तरीके से पहुँचना । स्वादिष्ट रात्रि भोजन और प्रात:काल बाबा धाम और बासुकि नाथ का दर्शन की व्यवस्था। सभी कार्यक्रम मन को मोहते चले जा रहे थे। 170 लोगों को लेकर बाबा बासुकिनाथ जाना, समवेत स्वर में भजन करना और फिर समय सीमा का अनुपालन करते हुए, वापस नैपुण्य शिविर स्थल आना...सब मिलकर नयी उर्जा प्रदान कर रहे थे। सायंकाल से बौद्धिक सत्रों का आयोजन, आए हुए अनुभवी और तपे हुए अधिकारीगण के साथ समय बिताना, उनको सुनना और ग्रहण करना यह तो हम कार्यकर्ताओं के उत्साह-वर्धन के लिए एक पौष्टिक आहार की भाँति था। कल्याण आश्रम केअखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख माननीय श्री भगवान सहाय जी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से कल्याण आश्रम की जो रूपरेखा खींची, ऐसा लगा कि परीक्षा के पहले का Revision हो। कल्याण आश्रम की गतिविधियों से लेकर कार्यकर्ता के निर्माण पर आदरणीय श्री भगवान जी ने हमारा मार्गदर्शन किया। बौद्धिक सत्र के पश्चात सांस्कृतिक सत्र का आयोजन कार्यकर्ताओं की बहुमुखी प्रतिभा को मंच प्रदान करने की अद्भुत परिकल्पना थी। ओजस्वी गीत गायन ने हमें और भी अधिक स्फूर्तिवान बना दिया।दूसरे दिन के सत्रों में महानगर के अनुभवी कार्यकर्ताओं द्वारा दिए गए मार्गदर्शन संबोधन से हमें अनुभूति हो रही थी कि ईश्वर ने हमें एक ऐसे संगठन से जोड़ा है, जो पूर्णत: ईश्वरीय कार्य है। इससे अतिरिक्त स्वादिष्ट व्यंजनों की सुगंध, सतनाली भवन के बौद्धिक कक्ष का सकारात्मक पर्यावरण, देवघर में परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए कार्यकर्ताओं की उपस्थिति हमें और भी आगे बढ़कर कार्य करने की प्रेरणा दे रही थी। यूँ कहा जाए कि नैपुण्य शिविर से हम कार्यकर्तावृन्द एक नयी पहचान लेकर लौटे, तो अतिश्योक्ति न होगी.. साझा कर रही हूँ अपने हृदय के उद्गार कतिपय पंक्तियों द्वारा-

न पूछ कि मेरी मंज़िल कहाँ है
अभी तो सफर का इरादा किया है।
न हारूँगी हौसला चाहे कुछ भी हो जाए,
ये मैंने किसी और से नहीं, खुद से वादा किया है?
काम ऐसे करो कि पहचान बन जाए,
चलो ऐसे कि निशान बन जाए ।
अरे ज़िंदगी तो हर कोई जी लेता है बंधुओं
अगर दम हो तो जियो ऐसे कि मिसाल बन जाएँ। ■

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की पहल

यूपी के रेनुकूट बामणी में खो-खो और तीरंदाजी प्रतियोगिताएं आयोजित

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की ओर से यूपी के रेनुकूट बामणी में 30 और 31 दिसंबर को भारतीय खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें खो-खो और तीरंदाजी की प्रतियोगिताएं शामिल की गई। इसमें पूरे भारत से 1200 बच्चों ने भाग लिया, जिसमें 600 लड़कियां और 600 लड़के थे। संस्था के अध्यक्ष रामचंद्र खरारी और संगठन मंत्री अतुल जोग इस कार्यक्रम में सक्रिय रहीं। उत्तर बंगाल के पांच जिलों से 31 बच्चे संस्था के हावड़ा कार्यालय में 2 दिन से ठहरे थे। संस्था की हावड़ा महानगर शाखा के अध्यक्ष शंकरलाल हकीम हैं, जबकि हावड़ा कार्यालय के प्रमुख सज्जन लाल अग्रवाल और मंत्री मोहनलाल गर्ग हैं। लक्ष्मी देवी अग्रवाल की भी संस्था के काम में सक्रिय भूमिका रहती है। उत्तर बंगाल से आए बच्चों के खाने पीने की पूरी व्यवस्था हावड़ा शाखा ने की थी। ये बच्चे खुश होकर यहाँ से रेनुकूट के लिए रवाना हो गए।

उल्लेखनीय है कि वनवासी लोगों में शारीरिक क्षमता एवं कौशल विपुल मात्रा में है। सुदूर गाँवों में जाना खेल प्रतिभाओं की शोध कर उन्हें प्रशिक्षण देकर अवसर प्रदान करना काफी अहम है। आज कई वर्षों से इस खेलकूद के क्षेत्र में कार्यरत वनवासी कल्याण आश्रम ने अनेक उपलब्धियाँ पाई हैं और खेल जगत को कई युवा खिलाड़ी मिले हैं। प्रति चार वर्षों में एक बार राष्ट्रीय स्तर पर एक खेल प्रतियोगिता का आयोजन होता है। इसके पूर्व तहसील (ब्लाक) स्तर से लेकर जिला एवं प्रान्त स्तर पर भी प्रतियागिताओं का आयोजन होता है। सारे देश में हज़ारों, लाखों वनवासी युवा इसमें सहभागी होते हैं। प्रशिक्षण और खेलने का अवसर, दोनों प्राप्त होने के कारण प्रतिभा निखरती है। परिणामस्वरूप सुदूर गाँवों के खिलाड़ियों को आगे आने का अवसर मिलता है। खेलकूद आयाम के माध्यम से दैनिक अथवा साप्ताहिक खेल केन्द्र चलते हैं, जिसके कारण ग्रामीण युवा संगठित होते है। कई स्थानों पर युवकों के साथ युवतियाँ भी खेल के क्षेत्र में अपना कौशल प्रकट करती हैं। ■

अमृत वचन

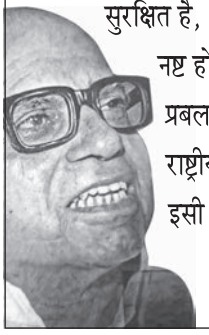

हम सभी भारत माता की संतान है।
हम नागा, मिजो, संथाल, उरांव, गोंड,
भील, बोडो, मुंडा, कोल, किरात होते हुए भी,
हिंदू समाज की बगिया के फूल हैं।
हर फूल हिंदू समाज रूपी वृक्ष से
जीवन रस प्राप्त कर रहा है।
वृक्षों से जुड़े रहने पर ही फूल का जीवन
सुरक्षित है, अलग होने पर वह
नष्ट हो जाता है। इस सत्य भावना का
प्रबल जागरण करने से हमारी
राष्ट्रीय एकातता की भावना पुष्ठ होगी।
इसी से हम धर्म युद्ध को जीत सकेंगे।

- वनयोगी बालासाहेब देशपांडे

मकर संक्रांति : सूर्य के स्वागत में सजता
समर्पण का उत्सव

- भगवान सहाय, अ.भा.नगरीय प्रमुख

मकर संक्रान्ति अपने देश का ही नहीं वरन सारे भूमंडल का सारी मानव जाति का एक महान पर्व है। क्योंकि यह धरती माता का जन्म दिवस है। इसी दिन हमारी धरती सूर्य से पृथक होकर स्वतंत्र ग्रह के रूप में सूर्य की प्रदक्षिणा करने लगी। यह उल्लेख सामवेद के तांडय ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। जब पृथ्वी द्वारा सूर्य की एक वर्ष में परिक्रमा निर्विघ्न पूरी हुई तब ऋषियों ने पवित्र अग्नि जलाकर बहुत बड़ा यज्ञ किया और आनंद की रात्रि मनाई। आनंद की रात्रि के लिए संस्कृत शब्द है 'लौहड़ी' उसी से पंजाब में 'लौहड़ी' शब्द बन गया। इसे ओणम्, पोंगल जैसे विविध नामों से हम जानते है जिससे सम्पूर्ण भारतवर्ष को जोड़ा गया है।

मकर संक्रान्ति का एक नाम उत्तरायण भी है। यह उत्तरायण का काल शुभ काल है। यह उत्थान का काल है, प्रगति का काल है। यह ऊष्मा का काल है, यह ज्योति का काल है। यह समुन्नति का काल है। इसलिए श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान ने प्राचीन परंपरा को पुनः याद दिलाते हुए कहा कि हमें जितना सुकृत हो, शुभ कर्म हो उत्तरायण के समय करने चाहिए। ब्रह्मज्ञानी लोग जब उत्तरायण मे शरीर त्याग कर के जाते हैं, तब वे ब्रह्मलोक को प्राप्त करते हैं, मोक्ष को प्राप्त होते हैं। इसलिए महाभारत युद्ध के पश्चात बाण शैय्या पर असह्य वेदना सहते हुए भी पितामह भीष्म प्राण त्याग ने के लिए उत्तरायण की राह देखते रहे थे तथा उत्तरायण के दिन प्राण त्यागने से पहले धर्मराज युधिष्ठिर से उन्होंने कहा कि उनकी मृत्यु के पश्चात ही हस्तिनापुर राज्य में धर्म की ध्वजा फहराकर राज्यारोहण करना चाहिए। इसलिए मकर संक्रान्ति पर्व भीष्म पितामह के निर्वाण प्राप्ति का दिन भी है और धर्म की जय का दिन भी है। धर्म ध्वजा को आकाश में लहराने का दिन भी है।

मकर संक्रान्ति भगवान परशुराम के पाप प्रक्षालन हेतु उनके द्वारा परशुराम कुंड में नहा कर प्रायश्चित्त का दिन भी है और महाभाग भगीरथ द्वारा गंगावतरण करवा कर गंगासागर में स्थित कपिल आश्रम तक गंगा को लाकर अपने पूर्वजों का उद्धार कराया। वह दिन भी मकर संक्रान्ति का ही दिन था।

अध्यात्म के अधिष्ठान पर भारत का पुनर्जागरण करने वाले स्वामी विवेकानंद ने कहा, 'गर्व से कहो हम हिन्दू है।' उनका जन्म भी मक्रर संक्रन्ति को ही हुआ था। इस युग में संघे शक्ति कलौ युगे अर्थात संगठन शक्ति का ही महत्व है, जो समर्पण भाव से ही बढ़ती है।

विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसी उत्तरायण के पर्व को पवित्र मानकर शांतिनिकेतन में स्थित अपने निवास स्थान का नाम उत्तरायण रखा और इसी दिन से वहाँ माघ मेला शुरू किया। गाँव-गाँव में नदी तीरें, स्थान-स्थान पर तीर्थों में एवं नदियों के संगम स्थल को तीर्थ मानकर मकर संक्रान्ति के दिन स्नान करते हैं। यथा संभव दान देकर अपने तन-मन को पवित्र करते हैं। यह हमारी परम्परा वर्षों से चली आ रही है। इस पवित्र दिन का स्मरण कर हम भी क्यों नहीं वनवासी कल्याण आश्रम की सेवा रूपी गंगा में स्नान करने का संकल्प दोहराये और शुभ कार्य हेतु इस राष्ट्रीय यज्ञ में समिधा स्वरूप दान देकर अपने तन-मन को पवित्र बनायें। एक ओर वनवासी कल्याण का कार्य भी बढ़ रहा है, तो दूसरी तरफ धर्मांतरण और मति भ्रम फैलाकर सीधे सरल वनवासी समाज को हिंदू समाज से अलग करने का षड्यंत्र भी चल रहा है।

इसलिए इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में हमारी जिम्मेदारी अधिक बढ़ जाती है कि इन चुनौतियों को मात देने के लिए समाज में सेवा के साथ-साथ जागरण प्रबोधन के

कार्य को भी बढ़ावें। यह तभी संभव है जब हम कार्य करने वाले हाथ बढ़ावें अर्थात कार्यकर्ताओं को बढ़ायें और साधन संग्रह में भी वृद्धि करें ताकि धर्म, संस्कृति, परंपराओं की रक्षा एवं राष्ट्र की एकता और अखंडता का ईश्वर प्रदत्त यह कार्य निरंतर निर्बाध गति से चलता रहे और हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

अपना कार्य समाज के सहयोग से ही चलता है इसलिए कल्याण आश्रम के कार्य हेतु लगने वाला धन एवं साधन संग्रह करना प्रत्येक कार्यकर्ता का कर्तव्य है। इस हेतु समय एवं साधन दान का संकल्प करें। महात्मा गांधी कहते थे, ''ग्यारह माह सेवा कार्य करो और एक माह साधन संग्रह करो। इससे सभी कार्यकर्ताओं को सामाजिक दायित्व का भान रहता है। अहंकार भी गलता है।''

तो आइए! अत: दान के महापर्व मकरसंक्रांति के पावन अवसर पर वनवासी भाई-बहनों के विकास के लिए मुक्त हस्त से दान करें। ■

अपील !!

समस्त कार्यकर्ता बंधु और भगिनी

आओ मिलकर दान के महापर्व को मकर संक्रान्ति के उत्सव को सार्थक दान उत्सव के रूप में स्थापित करें। जनजाति भाई-बहनों के विकास के लिए व्यक्ति संग्रह, धन संग्रह और वस्तु संग्रह की महती आवश्यकता है। आने वाले ये 15 दिन समर्पण उत्सव के लिए तैयार रखिए। हम निकल पड़ें द्वार-द्वार। वनों में रहने वाले भाई-बहनों के बारे में जन-जन को बताएँ। उनके विकास के लिए दानदाताओं को सार्थक दान के लिए तैयार करें। कल्याण आश्रम का प्रत्येक कार्यकर्ता अपने आप में ज्योतिपुंज है। अपनी इस शक्ति को पहचानकर मकरसंक्रांति के दान उत्सव को वनवासी भाई-बहनों के सपनों को साकार करने वाला उत्सव बनाएँ तथा पुण्यभागी बनें। ■

विवाह की 50वीं वर्षगाँठ के आयोजन पर समाज को संदेश देने वाली एक अनुकरणीय पहल

हम सभी कहीं न कहीं आहत हैं, किंकर्तव्यिमूढ़ हैं। आज मांगलिक पारिवारिक शुभ अवसर दिखावे की भेंट चढ़ते जा रहे हैं। स्नेह, समर्पण, आतिथ्य तो अब किसी भी आयोजन में रहा ही नहीं। हम भूल गए हैं कि भारतवर्ष की सनातन परंपरा **तेन त्यक्तेन भुंजीथा:** और दान परंपरा में विश्वास करती रही है। यज्ञ, भगवद्कथा, मांगलिक अवसरों पर दान करने का समृद्ध इतिहास वैदिक काल से ही साक्षी रहा है। आज जब इन स्वस्थ प्रथाओं को एक तरीके से भुलाने का रिवाज़ चल पड़ा है, ऐसे में संगठन के कार्यकर्ता श्रीमती निर्मला देवी और श्री श्यामसुंदर दास जी के गृहस्थ जीवन के 50 वर्ष पूरे करने पर उनकी संतति ने उनके स्वर्ण जयंती समारोह को रचनात्मक, सृजनात्मक बनाने का प्रयास किया। इस शुभ अवसर पर दीप यज्ञ, 1000 वृक्षों का दान, गो सेवा के लिए समर्पण, वनवासी क्षेत्र के विकास के लिए मंगल निधि की भेंट समर्पित हुई। गायत्री यज्ञ परंपरा से जुड़े इस परिवार ने समाज के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण स्थापित किया। संदेश दिया कि वैदिक काल से ही स्थापित अपने जीवन के शुभ अवसरों पर स्वस्थ दान प्रथा को भूलना नहीं चाहिए। **हस्तस्य भूषणं दानं दानं ख्यातिकरं सदा हितकरं संसार सौख्याकरं**। आमंत्रित अतिथियों ने भी इसमें सहयोग किया।

कल्याण भारती श्रीमती निर्मला देवी और श्री श्यामसुंदर दास जी को इस रचनात्मक पहल के लिए बधाई देती है और वर्षगाँठ की हीरक जयंती के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ देती है। ■

बोधकथा

श्रीकृष्ण का आदेश

एक श्रीकृष्ण भक्त अत्यंत गरीब महिला अत्यंत ही विकट स्थिति में आ गई! कई दिनों से खाने के लिए पूरे परिवार को नहीं मिला।

एक दिन, उसने रेडियो के माध्यम से, 'श्रीकृष्ण' को अपना संदेश भेजा, कि वे उसकी मदद करें। यह प्रसारण, एक नास्तिक, घमण्डी और अहंकारी उद्योगपति ने सुना और उसने सोचा कि क्यों न, इस महिला के साथ कुछ ऐसा मजाक किया जाये कि उसकी 'श्रीकृष्ण' के प्रति आस्था, डगमगा जाये। उसने अपनी सेक्रेटरी को कहा- वह ढेर सारा खाना और महीने भर का राशन, उसके घर पर देकर आये और जब वह महिला पूछे, किसने भेजा है, तो कह देना कि शैतान ने भेजा है।

जैसे ही महिला के पास, सामान पहुँचा, पहले तो उसके परिवार ने तृप्त होकर भोजन किया, फिर, वह सारा राशन अलमारी में रखने लगी। महिला ने पूछा नहीं कि यह सब किसने भेजा है। तब सेक्रेटरी से रहा नहीं गया तो उसने पूछा आपको क्या जिज्ञासा नहीं होती कि, यह सब किसने भेजा है?

उस महिला ने बेहतरीन जवाब दिया- इसमें पूछना क्या - 'कृष्ण' जब आदेश देता है तो 'शैतानों' को भी उस आदेश का पालन करना पड़ता है। इस बोधकथा से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य का अहंकार परमात्मा के विधान के समक्ष कहीं नहीं टिकता। ■

कविता

अब रुकना हमें नहीं ह

-लक्ष्मीनारायण भाला "लक्खी दा"

हम जनजाति नर-नारी
सब मिलकर साथ चलेंगे ।
अब रुकना हमें नहीं है
अब झुकना हमें नहीं है।। धृ.।।

रघुकुल के राम हमारे
यदुकुल के श्याम दुलारे।
सूरज-चंदा और तारे
वन-पेड़-पशु है प्यारे।।
इनकी गरिमा के खातिर,
जीना मरना हमको है।।
हम जागे और जगायें,
अब सोना हमें नहीं है ?।। 1।।

हमको छलने जो आते
भय-लोभ हमें दिखलाते।
जो धर्म हमारा अपना
उसको हमसे छुड़वाते।।
इन धूर्तों की चालों को,
हम समझ नहीं पाते।।
अब समझ चुके हैं जब हम,
तो डरना हमें नहीं है।। 2।।

एकलव्य, वाल्मीकि जैसे
बिरसा, गहिरा भी वैसे।
रानी गाईदिन्ल्यू कहतीं
पढ़-लिख कर बढ़ना कैसे।।
हम ऐसे काम करेंगे,
जिसमें भारत-गौरव है।।
मेहनत-हिम्मत है हममें,
अब थकना हमें नहीं है।। 3।।

अब रुकना हमें नहीं है... ■

संगठन के विविध कार्यक्रम

दादी के मंगल में प्रसन्नमना कार्यकर्ता

मंगल पाठ का भव्य मंच

हावड़ा कार्यालय में अधिकारियों के साथ संवाद करते हुए वनवासी खिलाड़ी

कार्यशाला को संबोधित करती हुई सुरभि जैन

कल्याण भवन में सिलाई सीखती हुई वनवासी बच्चियां

नैपुण्य शिविर में मंचस्थ अधिकारी एवं कार्यकर्ता

सिलाई प्रशिक्षण, खेल, शिविर सम विविध भाँति के ये आयोजन।
वनवासी उत्कर्षण हेतु, किया सती दादी का मंगल।।

शिशु मेला 2022 की झलकियाँ

बाल-दिवस पर शिशु संग क्रीडा मानो ईश्वर संग हो खेला।
वनवासी के छिपे हुनर को, मंच दे रहा यह शिशु-मेला।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com